डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 11 मूल्यः 5 रुपए पृष्ठ : 4 R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

शिखर दृष्टि जीवन की... साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

शीर्षक सत्यापन पत्र संख्या
RAJHIN16831/20/01/2013-TC

माँ होती बच्चे की प्रथम गुरु,
पिता होते पालनहार,
प्रथम पाठशाला परिवार कहलाता
मगर जो अपने ज्ञान के प्रकाश से
बच्चे का भविष्य है गढ़ता वो
ही शिक्षक कहलाता।

शिक्षक दिवस
पर हार्दिक शुभकामनाएं

जयपुर, मंगलवार, 07 सितम्बर, 2021

hillviewsamachar@gmail.com

डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के पहले उपराष्ट्रपति (1952- 1962) तथा दूसरे राष्ट्रपति (1962-1967) रहे। वे एक ऐसे शिक्षक थे जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ के अपने विद्यार्थियों को पढ़ाने का काम ही नहीं किया बल्कि उन्हें सामाजिक मूल्यों पर आधारित ज्ञान को भी बढ़ने और गढ़ने का भी काम किया। वे विद्यार्थियों में ऐसे शिक्षक के रूप में लोकप्रिय हुए जो की अपनी बातों को रखने के लिए मनमोहक कहानियों, सरल भाषा और विनम्रता को सर्वोच्च स्थान देते थे। वे अपने जीवन मे शिक्षा को बहुत महत्व देते थे। उनके स्मरण में हर वर्ष 05 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

संसार में कोई गुरुहीन नहीं हो सकता...

राजस्थान में एक लोकशब्द है- नुगरा। संभवतः कृतघ्न का पर्याय है यह। यह नुगरा शब्द नगुरा से बना है, अर्थात् वह जिसका कोई गुरु नहीं, या फिर जिसने गुरु को माना ही नहीं। नगुरा निगुरा भी हो सकता है।

लोकगीतों का निगोड़ा इसी का रूपांतर हो सकता है।

वह अपने नटखटपन, अठखेलियों और छेड़खानियों से इतना घिस गया है कि लोग उसे अभद्र मान लें, पर गीतों में इस अभद्रता का भी रस होता है।

लोक में आकर तो भद्र ही भद्दा बन जाता है। वहां अभद्र तो हास-परिहास का रस है, श्रृंगार का भृंगार है। भोजपुरी बोली में एक शब्द है- निखुरा। यह शब्द भी संभवतः इसी का रूपांतर है। इसका अर्थ होता है- बहुत मीन-मेख निकालने वाला, खास तौर पर खाने-पीने के मामले में।

मीन-मेख शब्द भी मीन-मेष राशियों के नाम पर बना है। बारह राशियों में मीन अंतिम राशि है और मेष पहली राशि। कोई यह प्रश्न उठा सकता है कि निगुरा के ग का निखुरा में ख होना इसमें बहुत सुसंगत नहीं लगता, परंतु जब संस्कृत के नक्कारा का लोक में नगाड़ा बन सकता है, तो यहां भी यह संभावना तो बनती ही है। संभव यह भी है कि यह निखुरा शब्द नखरे शब्द से बना हो, आखिर निखुरा व्यक्ति कुछ नखरे ही तो दिखा रहा है। फिर कौन जाने यह नखरा शब्द किससे बना है। जो भी हो, यह तो संभावना है ही कि इन सारे शब्दों में न शब्द कहीं न कहीं नकारात्मक अर्थ में आया हुआ है, वह संस्कृत के नञ् समास के रूप में हो या न हो।

कृष्णाकांत पाठक

यह गुरु शब्द भी बनारस में जाकर 'गुरू' बन जाता है, जो मूलतः मित्र या यार का वाचक बन जाता है। ऐसे में यह अपना गुरुत्व खोकर माधुर्य अवश्य प्राप्त कर लेता है।

एक शिक्षक या आध्यात्मिक शिक्षक के लिए गुरु शब्द का प्रयोग भारतीय मनीषा की अपनी देन है। इसलिए आधुनिक अंग्रेजी में भी इसे जस का तस अपनाया गया है।

और सच तो यह भी है कि गुरुत्व सर्वत्र समान हो ही नहीं सकता। संसार में गुरुत्व के भी स्तरभेद होते ही हैं-

माता-पिता एक स्तर के गुरु हैं, शिक्षकगण दूसरे स्तर के गुरु हैं, परिवार व समाज तीसरे स्तर के गुरु हैं, संत, सुजन, दुर्जन, मित्रगण चौथे स्तर के गुरु हैं, संसार भर के विचारक-चिंतक पंचम स्तर के गुरु हैं। किस चीज से नहीं सीखते?

व्यक्तियों से, वस्तुओं से, घटनाओं से, दुर्घटनाओं से, सुजनों से, दुर्जनों से --सब से ही तो सीखते हैं। तो यह लघु शब्द गुरु भी कितना बृहस्पति है!

गुरु होकर तो गौरव लाता ही है, अगुरु होकर भी अपने रस से हृदय के भार को लघु कर जाता है। वापस नुगरा या निगुरा की ओर लौटते हैं, जो गुरुहीनता का वाचक है। संसार में कोई गुरुहीन नहीं हो सकता। संभव है, कोई जिनसे सीखा हो, उनसे आगे, बढ़ कर व बेहतर सीख जाए। अनेक स्वयंसिद्ध साधक-से भी हो सकते हैं, वे स्वयं ही पढ़ कर स्वयं को गढ़ कर तैयार कर लें। वे अलग अर्थ में नगुरे हैं, निगुरे हैं।

उन्होंने कोई कृतघ्नता नहीं अपनाई, बस स्वयं को साधक बनाकर स्वयंसिद्धता की भावना अपना ली। वैसे यह माना भी जाता है कि सबसे अच्छा गुरु ही वह है, जो आजीवन शिष्य बना रहे व सबसे अच्छा शिष्य ही वह है, जो स्वयं अपना गुरु बन जाये। सब कुछ न कुछ सीमा तक स्वयं के बल पर सीखते ही हैं। संसार के समस्त अनुसंधान गुरुत्व से अधिक स्व-गुरुत्व से उपजे हैं। यह एक विश्वविद्यालयीय विडंबना है कि वहां अनुसंधान के लिए गुरुत्व को आवश्यक मान लिया गया है। संभवतः इसी कारण देश के अनुसंधान का स्तर भी बहुत बेहतर नहीं हो सका।

कबीर भी तो कह कर गए थे-

जाका गुरु है अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधै अंधा ठेलिया, दुन्यू कूप पडंत।।
जाका गुरु है गीरही, गिरही चेला होय।
कीच-कीच के धोवते, दाग न छूटे कोय।।

ये बातें गुरुत्व के दूसरे आयाम की ओर ले जाती हैं, जहां गुरुत्व प्रतिफलित नहीं होता। दरअसल वहां गुरु न होकर कोई अगुरु बैठा होता है। परंतु संस्कृत में अगुरु शब्द भी एक विशेष और पावन अर्थ रखता है। पूजन की धूप में प्रयुक्त होने वाली एक वनस्पति है, अगुरु। यही शब्द संस्कृत से हिंदी में आकर अगर बन गया। अगरबत्ती का मूल आधार कभी यही होता था। अगुरु वृक्ष को अगुरु क्यों कहा गया, ज्ञात नहीं।

[शेष पेज 3 पर

वह एक शिक्षक

धुव गुप्त

शिक्षक सिर्फ वे नहीं होते तो शिक्षा और अनुशासन के माध्यम से हमें जीवन-संघर्षों के लिए तैयार करते हैं। शिक्षक वे लोग भी हैं जो जीवन-यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर अनजाने ही हमें जीने के सबक और सलीके सिखा जाते हैं। हर शिक्षक दिवस पर मुझे अपने जीवन में मिला एक युवा बहुत याद आता है। था तो वह अनपढ़, लेकिन मेरे प्रोफेशनल जीवन का सबसे बड़ा सबक मुझे उसी से सीखने को मिला था। वे पुलिस में मेरे कैरियर के शुरुआती दिन थे। मैं तब मिनी चंबल के नाम से कुख्यात बिहार के एक बेहद अपराधग्रस्त जिले पश्चिमी चंपारण में पदस्थापित था। एक बरसाती रात में मैं गंडक नदी के दियारे में अपराधियों के एक गिरोह के विरुद्ध छापेमारी के बाद पुलिस के कुछ जवानों के साथ लौट रहा था। रास्ते में एक छोटे-से गांव के पास गाडी बिगड़ गई जिसके बनने की संभावना अगली सुबह तक नहीं थी। गांव से कई घरों से कुछ खाट मंगाकर हम एक किसान के बड़े-से बरामदे में आराम करने लगे। मैं बेतरह थका हुआ था। एक ग्रामीण ने आकर बताया कि गांव का एक लड़का आपके हाथ-पैर दबाने की अनुमति मांग रहा है। मेरे हां कहते ही बीस-बाईस साल का एक युवक आकर मेरे हाथ-पैर दबाने लगा। दीये की रोशनी में उसका चेहरा साफ नहीं दिख रहा था। पूछने पर अपना नाम उसने उद्धव यादव बताया। थोड़ा आराम आने के बाद मैंने उससे पूछा - 'तुम यही काम करते हो ?' उसने कहा - नहीं। मुझे आपसे कुछ कहना था, सर। 'मेरी सहमति पाकर उसने कहा - मैं एक लोकगायक हूं और बहुत अच्छा बिरहा गाता हूं। आप सुनेंगे ?'

मेरे पैर दबाते हुए उसने आधे घंटे तक मुझे बिरहा गाकर सुनाया। आवाज़ में बुलंदी के साथ कशिश और दर्द ऐसी कि मेरी आंखें नम हो गईं। मुझे ऐसे गुनी कलाकार से पांव दबवाते बड़ी शर्मिंदगी हुई और मैं उठ बैठा। पूछा - 'तुमने बहुत दिनों बाद मुझे भावुक किया है। तुम्हें क्या इनाम दूं, उद्धव?' कुछ देर सोचने के बाद उसने कहा -'बगल के गांव के एक बाबू साहेब हैं, सर। मेरे बाबूजी ने उनसे कुछ कर्ज लिया था। बदले में वे दस सालों तक उनके यहां बेगारी खटते रहे। कर्ज फिर भी खत्म नहीं हुआ। दो साल पहले बाबूजी मरे तो वे चाहते थे कि उनकी जगह मैं उनके यहां मुफ्त काम करूं। मैं गांवों में घूम-घूमकर बिरहा गाता हूं जिससे थोड़ी-बहुत आमदनी हो जाती है। मैंने बाबू साहेब को साफ इंकार कर दिया। अगले दो-तीन महीनों में थाने में मेरे खिलाफ लूट और डकैती के तीन केस दर्ज हो गए। मैं तबसे बाबू साहेब के लठैतों और पुलिस से भागा-भागा फिर रहा हूं। बगहा के एक मास्टर साहेब ने आपके बारे में बताया तो मैं हिम्मत जुटाकर आपके पास आया हूं। मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए। आप बस मेरा इन्साफ कर दीजिये, सर !'

सुबह थाने पर पहुंच करकर मैंने उद्धव के तीनों केसों के रिकॉर्ड देखे। पढ़ने भर से लग गया कि तीनों मामले बनावटी हैं। तीनों के घटना-स्थल एक दूसरे से बहुत दूर थे, लेकिन तीनों के गवाह लगभग एक। गवाह भी उसी बाबू साहेब के परिवार के लोग, दूर के रिश्तेदार और नौकर-चाकर थे।

[शेष पेज 3 पर

गुरु की गहराई गुरु ही जाने

रामवतार कुमावत

तिब्बत की एक प्राचीन कथा है। एक गुरु ने अपने शिष्य को दूर पहाड़ों में एक आश्रम खोलने भेजा। जब आश्रम बन गया, उस शिष्य ने खबर भेजी कि मुझे एक सहायक की जरूरत है। खबर आयी, महीनों लगे खबर आने में क्योंकि पहाड़ बड़ा दूर था और पैदल ही यात्रा होती थी।

जब खबर पहुँची तो गुरु ने कहा–ठीक। उसने अपने सारे शिष्य इकट्ठे किये और सौ शिष्य चुने। जो संदेशवाहक संदेश लेकर आया था,वह हैरान हुआ क्योंकि संदेश तो सिर्फ इतना था कि एक साथी और भेज दें।

सौ भेज रहा है यह गुरु! उसने पूछा कि आप क्या कर रहे हैं, आपने पत्री ठीक से पढ़ा?एक माँगा है।गुरु ने कहा–सौ चलेंगे, तब एक पहुँचेगा। अगर एक को पहुँचाना हो तो सौ चुनने पड़ने हैं।बात उसे बिल्कुल जँची नहीं,हद हो गयी,जरूरत से ज्यादा हो गयी !अगर इतना भी कहता कि दो चुन लेते हैं कि चलो एक तो कम–से–कम पहुँच जाए–कोई बीमार पड़ जाएगा,रास्ते में कोई शेर,सिंह खा जाएगा,कुछ झंझट हो जाए,न पहुँच पाए। सौ? यह जरा अतिशयोक्ति हो गयी। लेकिन जब गुरु कह रहा है तो संदेशवाहक कुछ बोल नहीं सका।सौ आदमियों को लेकर चला और जल्दी ही गुरु की बात प्रमाणित होने लगी।पहले ही गाँव में सम्राट मर गया था–जहाँ वे रुके पहली रात–उसके बेटे का सिंहासन–आरोहण होने को था।नब्बे भिक्षुओं की जरूरत थी आशीर्वाद देने के लिए।परंपरागत उनका नियम था।

नब्बे भिक्षु खोजना बहुत मुश्किल था।मगर उस दिन धर्मशाला में जब पहुँचे तो देखा सौ भिक्षु रुके हैं। सम्राट ने खबर भेजी कि नब्बे भिक्षु तो रुक जाएँ; जो भी तुम पुरस्कार माँगोगे,दूँगा।बड़ी मुश्किल पड़ी। कई डावाँडोल हो गये। पुरस्कार इतना बड़ा था–जो भी माँगोगे ! तो उन्होंने सोचा, अब जाने में सार क्या' और फिर उन्होंने कहा–संदेश एक के लिए आया था, यह तो अतिशयोक्ति है सौ को भेजना, यह फिजूल, बेमानी बात है, इसमें कुछ अर्थ नहीं है, यह गुरु झक्की' है। उन्होंने हजार बहाने खोज लिए और उन्होंने कहा कि फिर पुरस्कार लेकर हम पहुँच जाएँगे, महीने–पंद्रह दिन की देर सही! देर से क्या बना–बिगड़ा जा रहा है? और फिर दस तो जा ही रहे हैं! नब्बे तो वहाँ रुक गये।

दूसरे गाँव में पड़ाव पड़ा।उस गाँव का पुजारी मर गया था।और बहुत दिन से वे तलाश में थे कि कोई योग्य व्यक्ति मिल जाए; दस भिक्षु।गाँव के लोगों ने प्रार्थना की कि पुजारी की जरूरत है।नौकरी भी अच्छी थी,रहने की सुविधा भी अच्छी थी,एक वहाँ रुक गया।

और ऐसे ही यात्रा चलती रही,आदमी खोते गये।आश्रम के पहुँचने के पहले आखिरी पड़ाव पर दो ही आदमी बचे।

संदेहवाहक अब आश्वस्त होने लगा कि गुरु झक्की नहीं है।दो ही बचे जितना उसने सोचा था कि दो ही भेजना काफी है।मगर उस रात उनमें से एक कट गया। गाँव में एक नास्तिक था,उसने आकर दोनों को चुनौती दे दी कि मैं यह कुछ नहीं मानता।यह बुद्ध–धर्म, यह बुद्ध, यह सब बकवास है।मैं चुनौती देता हूँ तुम्हें शास्त्रार्थ की।एक ने तो दूसरे से कहा कि इस झंझट में मत पड़ो, हमें पहुँचना है अपने गुरु तक,यह शास्त्रार्थ कितने दिन चलेगा क्या पता? अट्ठान्नबे साथी तो छूट ही गये हैं,अब और तुम न छूट जाना मगर एक तो बोला कि चाहे अब कुछ भी हो जाए।बुद्ध को कोई लांछना लगाए,यह मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। यह जीवन–मरण का सवाल है। अगर यह पूरी जिदगी' भी लग गयी इसी शास्त्रार्थ में तो भी कोई हर्जा नहीं है! तुम जा सकते हो।मै तो इसको हरा कर ही आऊंगा।वह वहीं रुक गया।उसके साथी ने बहुत समझाया कि गुरु ने सौ भेजे हैं,कम–से–कम दो तो पहुँच जाओ।

[शेष पेज 3 पर

'गुरु की महिमा'

सरस्वती धानेश्वर

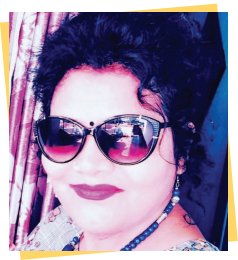

'**भारत** रत्न' डॉ राधाकृष्णन के जन्मदिवस को हमारा देश शिक्षक दिवस के रूप में मनाता है। भारत कभी भी अपनी जिम्मेदारियों, कर्त्तव्य और परंपराओं से विमुख नहीं रहा, वह सदैव अपनी परंपराओं का निर्वहन करते रहा है। प्राचीन काल से लेकर आज आधुनिक काल तक यदि हम गुरु के विभिन्न रूपों को वर्णित करें तो उसकी गाथा अपरंपार है, कालांतर में गुरु शिष्य परंपरा का निर्वहन होता था। आज वही परंपरा वर्तमान में शिक्षक, प्रशिक्षक, मेंटोर, और व्याख्याता इत्यादि विभिन्न रूपों में परिणित हुई है, नाम निश्चित ही बदले हुए हैं पर गुरु की महत्ता और उनके कार्यों का स्वरूप, कहीं न कहीं उसी प्राचीन परंपरा का निर्वाहन करता है।

[शेष पेज 3 पर

CMR पहुंची SMS हॉस्पिटल के कार्डियोलॉजिस्ट्स,डॉक्टर्स की बड़ी टीम

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के हुए मेडिकल टेस

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की एन्जियोप्लास्टी के बाद हेल्थ चेकअप करने डॉक्टर्स की एक बड़ी टीम मुख्यमंत्री निवास पहुंची। जयपुर के सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल की यह टीम काफी देर तक सीएमआर में रही। जिसमें कार्डियोलॉजिस्ट्स और हार्ट स्पेशियलिस्ट डॉक्टर्स ने मुख्यमंत्री की जांच की और उनसे सेहत की जानकारी ली। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का ब्लड प्रेशर और पल्स रेट भी जांचा गया। **एसएमएस मेडिकल कॉलेज प्रिंसिपल के नेतृत्व में डॉक्टर्स की बड़ी टीम ने की जांच:** टीम में एसएमएस मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ सुधीर भण्डारी के अलावा कार्डियोलॉजिस्ट्स डॉ राजीव बगरहट्टा, डॉ विजय पाठक, डॉ दीपक माहेश्वरी समेत 12 डॉक्टर्स सीएमआर में मुख्यमंत्री का चेकअप करने पहुंचे।

मुख्यमंत्री की मेडिकल जांच रिपोर्ट आई हैं ठीक: जांच के बाद डॉक्टर्स ने सीएम को बताया कि उनकी सेहत में लगातार सुधार है। उनकी अच्छी रिकवरी हुई है। साथ ही मेडिकल रिपोर्ट्स भी ठीक आई हैं। कुछ दिन और उन्हें उपचार जारी रखना होगा।

मुख्यमंत्री ने प्रदेश में हृदय रोग के बेहतर ईलाज के लिए सुझाव लिए: इसके बाद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने सभी डॉक्टर्स के साथ ड्रॉइंग रूम में बैठकर काफी देर तक चर्चा की। इस दौरान प्रदेश में हृदय रोग के बेहतर ईलाज के लिए मुख्यमंत्री ने सुझाव भी लिए।

अशोक गहलोत ने ट्वीट कर दी जानकारी: डॉक्टर्स की टीम के सीएमआर से जाने के बाद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने ट्वीट किया है। जिसमें गहलोत ने लिखा है कि आज निवास पर पोस्ट एन्जियोप्लास्टी चैकअप के लिए एसएमएस हॉस्पिटल के स्पेशियलिस्ट डॉक्टर्स की टीम आई। मेरी मेडिकल रिपोर्ट्स ठीक आई हैं।डॉक्टर्स की सलाह के मुताबिक आगे का ईलाज जारी रहेगा।

साथ ही, डॉक्टर्स की टीम के साथ प्रदेश में हृदय रोग संबंधी मेडिकल फैसिलिटीज़ को और बेहतर बनाने के लिए भी पॉज़िटिव चर्चा हुई।

REET की गाइडलाइन जारी: मोबाइल, घड़ी के साथ ज्वेलरी हुई बैन, परीक्षा से 30 मिनट पहले केंद्र पहुंचना जरूरी, 16 सितंबर तक जारी होंगे प्रवेश पत्र

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान में लगभग 3 साल बाद होने जा रही REET की तैयारी में जुटे अभ्यार्थियों का इंतजार अब खत्म होने जा रहा है। 31 हजार से ज्यादा पदों पर आयोजित होने वाली REET 26 सितम्बर को आयोजित होने जा रही है, जिसमें प्रदेशभर के 16 लाख से ज्यादा अभ्यर्थी शामिल होंगे। शिक्षा विभाग ने REET की गाइडलाइन जारी की है। इसका पालन नहीं करने पर अभ्यर्थी को परीक्षा देने से रोका जा सकता है।

ज्वेलरी पहनकर नहीं आएं परीक्षा देन: REET में शामिल होने वाले अभ्यार्थी परीक्षा कक्ष में घड़ी, चेन, अंगूठी, कान के टॉप्स, लॉकेट या किसी भी प्रकार के आभूषण पहनकर नहीं जा सकते है। इन सभी आभूषणों के पहनने पर रोक रहेगी। इसके आलावा पर्स, हैंडबैग या डायरी लाने पर भी रोक है। अगर अभ्यार्थी परीक्षा के दौरान अपने साथ इनमें से कुछ भी लाते हैं। तो उन्हें इसे परीक्षा केंद्र के बाहर रखना होगा और इसकी पूरी जिम्मेदारी भी परीक्षार्थी की ही होगी।

परीक्षा में पारदर्शी पानी की बोतल लाने की छूट: 26 सितंबर के दिन अभ्यर्थी परीक्षा केंद्र पर किसी भी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे कि मोबाइल, ब्लूटूथ, कैल्क्यूलेटर भी नहीं ला सकते हैं। ऐसे में अगर इनमें से कोई भी वस्तु अगर अभ्यार्थी के पास मिली। तो उसके खिलाफ अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम 1992 के तहत कार्रवाई होगी। वहीं, परीक्षा के दौरान अभ्यर्थियों को अपने साथ पानी की पारदर्शी बोतल लेकर आने की अनुमति रहेगी।

दो पारियों में होगी परीक्षा: REET का आयोजन दो पारियों में किया जाएगा। इसमें 16 लाख से ज्यादा अभ्यर्थी शामिल होंगे।

डॉ. मुमताज़ अहमद ख़ान

डॉ. आनंद के. गांगवार

शिक्षा और संस्कृति को नई दिशा और नए आयाम देने वाली इन दो शख्सियत को शिक्षक दिवस पर भावभीनी श्रद्धांजलि... पेज-4

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर, मंगलवार, 07 सितम्बर, 2021

संपादकीय

जाति से राजनीति चमकाने की कोशिश... जनगणना से क्या होगा पिछड़ी जातियों का कल्याण

उन्नीसवीं सदी के अमेरिकी विचारक हेनरी ए वालेस ने राजनेताओं के बारे में कहा है कि उनका अंतिम उद्देश्य है राजनीतिक सत्ता हथियाना। इसके लिए वे सारे छल-प्रपंच करते हैं, ताकि आम आदमी को वे शाश्वत अधीनता में रख सकें। भारतीय संदर्भों में उनका कथन क्षेत्रीय राजनीतिक दलों पर बहुत दूर तक लागू होता है, जो बुनियादी मुद्दों के बजाय अस्मिता या जाति की राजनीति करते हैं। देश में जाति के आधार पर जनगणना की मांग इसी की कड़ी है। इसमें कई सवाल हैं-जाति के आधार पर जनगणना की मांग क्यों की जा रही है? क्या यह पिछड़ी जातियों के कल्याण के लिए है? क्या यह राष्ट्रहित में है?

सरकार की नीति-योजनाओं का लाभ सभी जातियों को ठीक से नहीं मिल पाता: जदयू और राजद समेत बिहार के कई दलों के प्रतिनिधियों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिलकर 2021 की जनगणना में जाति आधारित जनगणना को शामिल करने की मांग की है। इसकी मांग सपा और राकांपा सहित देश के दूसरे क्षेत्रीय दल भी करने लगे हैं। चूंकि एससी और एसटी की जातिगत जनगणना पहले से ही होती है अत- यहां मांग ओबीसी की गणना के लिए है।

पिछड़ी जातियों को उचित हक नहीं मिल पाया: इन दलों का तर्क है कि सरकार की नीति-योजनाओं का लाभ सभी जातियों तक ठीक-ठीक पहुंचे इसके लिए जातिगत आंकड़े जरूरी हैं, लेकिन यह छिपा नहीं कि जनहित के बजाय इनका असली उद्देश्य मोदी सरकार को घेरना है। दरअसल एससी, एसटी और ईडब्ल्यूएस के साथ-साथ ओबीसी के हित में कई अहम निर्णय कर चुकी मोदी सरकार के हालिया कदमों से जाति की राजनीति करने वाले दलों में खलबली मची हुई है। पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा, राज्यों को ओबीसी पहचान का अधिकार, मेडिकल-नीट के केंद्रीय कोटे में ओबीसी आरक्षण और केंद्रीय मंत्रिपरिषद में ओबीसी की अभूतपूर्व सर्वाधिक संख्या आदि ने इन दलों की जमीन खिसका दी है। चूंकि मोदी सरकार के खिलाफ उन्हें कोई ठोस एजेंडा नहीं मिल पा रहा तो एक बार फिर जाति का जिन्न बोतल से निकालने की कोशिश हो रही है।

जाति जनगणना से देश की एकता और अंखडता होती प्रभावित: हालांकि, जाति हमारे समाज का यथार्थ है। दावा किया जाता है कि उच्च सोपान पर बैठीं तथाकथित सवर्ण जातियों के हाथों में ही कथित रूप से सत्ता-समृद्धि केंद्रित रही। पिछड़ी जातियों को उचित हक नहीं मिल पाया। इस बात को जानते हुए भी डा. आंबेडकर, नेहरू और पटेल आदि नेताओं ने जनगणना में जाति गणना को दूर ही रखा, क्योंकि देश की एकता और अखंडता इससे प्रभावित होती। अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो नीति के वे प्रत्यक्षदर्शी थे।

अंग्रेजी राज में जातिगत जनगणना राष्ट्र की एकता कमजोर करने की थी साजिश: मार्क गैलेंटर जैसे पश्चिमी समाजशास्त्रियों तक का कहना था कि अंग्रेजी राज में जातिगत जनगणना भारतीय राष्ट्र की अवधारणा और एकता को कमजोर करने की औपनिवेशिक साजिश थी। स्वतंत्र भारत में भी पिछड़ी-कमजोर जातियों को उनका उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाया तो इसकी वजह थी मंडल आंदोलन के पश्चात आरक्षण या अन्य योजनाओं का लाभ चंद जातियों और कुछ परिवारों में सीमित रह जाना। विभिन्न अध्ययन बताते हैं कि ओबीसी राजनीति में

नेतृत्व कुछ जातियों तक सीमित है। उसी तरह आरक्षण का लाभ भी कुछ ही जातियों को मिला है। ओबीसी की अधिकांश जातियों की दशा में यह अवसरवादी नेतृत्व आगे सुधार लाएगा इसकी कोई गारंटी नहीं।

खिसकती हुई राजनीतिक जमीन को बचाना है लक्ष्य: आज भी जाति आधारित जनगणना की उनकी मांग के पीछे उद्देश्य इन कमजोर तबकों का कल्याण नहीं, बल्कि अपनी खिसकती हुई राजनीतिक जमीन को बचाना है। ऐसी मांग कर रहे दलों को लगता है कि ओबीसी आबादी के आंकड़े 50 फीसद से ज्यादा होने पर रोजगार-शिक्षा आदि में वर्तमान के 27 फीसद से ज्यादा आरक्षण की मांग कर फिर से अपनी राजनीति चमका सकते हैं, लेकिन वे कई चीजें भूल रहे हैं। जैसे-मंडल वाले फैसले में 27 फीसद आरक्षण देते समय यह मानकर चला गया था कि देश में ओबीसी आबादी 52 फीसद है, जो स्तर 1931 के जनगणना आंकड़ों के आधार पर था।

1992 में आरक्षण की सीमा 50 फीसद की गई थी: 1992 में सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण की सीमा 50 फीसद कर दी थी। इसने अनुच्छेद 15(4) एवं 16(4) के आधार पर आरक्षण की अनुशंसा तो की, लेकिन इसे अनुच्छेद 335 के साथ पढ़े जाने की सिफारिश की, जिसके अनुसार प्रशासन की दक्षता के संगत ही आरक्षण होना चाहिए। यद्यपि 1931 के बाद जातीय जनगणना के आंकड़े नहीं हैं, परंतु 2007 में राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) ने एक सर्वेक्षण कर देश में ओबीसी आबादी 41 प्रतिशत होने का अनुमान लगाया था। यह मंडल आयोग के अनुमानित 52 फीसद से कम ही रहा। जातिगत जनगणना के बाद यह संख्या चाहे कम हो या अधिक, विवाद तो उठेगा ही, जो सामाजिक समरसता को कमजोर करेगा। एक अनुमान यह भी है कि जिन जातियों की संख्या ज्यादा होगी, राजनीतिक दल उन्हीं को पूछेंगे और कम संख्या वाली जातियां हाशिये पर चली जाएंगी। वहीं जाति जैसे जटिल पहलू की जनगणना में व्यावहारिक कठिनाई यह है कि एक ही जाति अलग-अलग राज्यों में अगड़ी और पिछड़ी अथवा ओबीसी एवं एससी दोनों हो सकती है। मसलन बिहार में वैश्य जातियां आमतौर पर ओबीसी हैं, लेकिन उत्तर प्रदेश में वे सामान्य श्रेणी में हैं। इसी तरह धोबी जाति उत्तरी राज्यों में एससी में आती है तो गुजरात-महाराष्ट्र में ओबीसी है। जाटों को लेकर भी ऐसी ही उलझन है। राजनीति में जाति हालांकि पहले ही घुस चुकी है, परंतु जातिगत जनगणना के बाद यह और भी ज्यादा बढ़ेगी, इसमें कोई संदेह नहीं। यह अनायास नहीं कि जाति की राजनीति करने वाली क्षेत्रीय पार्टियां इसके लिए बहुत मुखर हैं।

कविता

गुरु बिन कुछ नहीं

शालू मिश्रा, मोहर

है ! गुरु तेरी महता का
क्या करूं बखान,
परिंदों को पहुंचा देते हो
सफलता के पायदान।
दिनकर सा चहुंमुखी प्रकाश
फैलाते हो,
जीवन की डगर को आसान
कर जाते हो ।
ये कच्ची ईंटें है इनको श्रेष्ठ
पकाते हो,
संचित ज्ञान का देकर के
अमूल्य उपहार।
सत्यता का जीवंत पाठ
पढ़ाते हो,
अमिट ऊर्जा का हो जाता
नवीन संचार ।
तेरी आराधना से शब्द अर्थ
का भंडार पा जाते है,
अंतरपट खुलकर होता
अद्भुत चमत्कार ।
शिक्षा की बगिया में बहार
सी छा जाती है,
स्वर्णिम स्वपन होने लगे जब
कलियों के साकार।

गुरु से रीत, प्रीत और भक्ति...

पंखुड़ी श्रीवस्तव, पटना

हर कोई चाहे छवि तुम्हारी,
लिए भाव, भ्रमरी - पदचारी,
नित्य निरंतर नृत्य है जारी,
पल पल लिए नयी तैयारी।

समझ गई यह माया सारी,
लिए संग मैं सीख तुम्हारी,
होती है पात्र कीअपनी
बुद्धि, विवेक और कला निराली ।

जाने इस माया के आगे,
क्यों बुद्धि, विवेक मैं हारी,
मुझे उबारो इस विभ्रम से,
देकर अपनी युक्ति प्यारी।

गुरु दे क्षमा, शील व कीर्ति,
गुरु से रीत, प्रीत और भक्ति,
गुरु में निहित श्रृष्टि की शक्ति,
गुरु से आदि, अंत और मुक्ति ।

सच्चा गुरु

शिक्षक अध्यापक जो कहलाए
माता-पिता से पहले आये
सच्चाई का जो पाठ सिखलाए
जीवन में कामयाब बनाए ...
होनहार नौनिहालो को आदर्शो का पाठ पढ़ाए
देश के हर बच्चे को भारत का इतिहास बताए...
जाति-धर्म के भेद बिना नित नई शिक्षा दे जाएँ
ज्ञान-विज्ञान का पाठ पढ़ाकर उन्नति के शिखर पर ले जाएं
मार्गदर्शक बनकर सही रास्ता जो दिखलाए
दोस्त बनकर जो आपको हर मुसीबत से बचाये...
अनुशासन और दृढ़ निश्चय का जीवन में जो महत्व समझाए
असल मायने में वह ही एक सच्चा गुरु कहलाए...

हिमांक वर्मा
कक्षा 8
आईआईएस, जयपुर

सबसे बड़ा गुरु तो ब्रह्मांड ही है...

ब्रह्मांड में व्याप्त शक्ति किसी न किसी रूप में सिखाती ही रहती है। सबसे बड़ा गुरु तो ब्रह्मांड ही है जो हर समय कुछ सिखाता ही रहता है। पहाड़, नदी, पेड़ पौधे पशु पक्षी सभी से कुछ न कुछ सीखते हुए ही बड़े होते हैं। माता पिता,सगे संबंधी, पड़ोसी सभी से ज्ञान मिलता है।स्कूल कॉलेज में अलग अलग गुरु से विषयवार ज्ञान मिलता है।

ज्ञान लेने वाले व्यक्ति का उम्र से कोई लेना देना नहीं होता। मनुष्य शिशुरूप से वृद्ध रूप तक विद्यार्थी ही रहता है।ये तो खुद पर निर्भर होता है कि क्या सीखना चाहते हैं और क्या सीख रहे हैं।अच्छा बुरा जो भी हो ज्ञान तो ज्ञान ही होता है।

अगर गुरु की बात करें तो 21वीं सदी का सबसे बड़ा गुरु तो इंटरनेट है। जो ज्ञान लेना चाहो,यहां से मिल जायेगा। गूगल गुरु तो हर तरह के ज्ञान का भंडार लिए बैठे हैं। अच्छा, बुरा सब तरह का ज्ञान यहां मिल जायेगा। वाट्सअप यूनिवर्सिटी तो बिना किसी भेदभाव के अपना पूरा ज्ञान उंडेलने को तत्पर है।

दुनिया की भीड़ में कितने तरह के लोग मिलते हैं और अच्छा, बुरा अनुभव दे जाते हैं उन अनुभव के आधार पर ही हम लोगों की पहचान करना सीखते हैं। इसी तरह से फेसबुक की आभासी दुनिया में भी हमें आभासी लोग मिल जाते हैं,और प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से उनसे भी बहुत सारा ज्ञान मिल ही जाता है।इस तरह वो भी गुरु की कतार में आते हैं।

मेरी ज़िंदगी भी हमेशा एक विद्यार्थी की

तरह ही रही।हमेशा कुछ सीखने की लालसा रहती है।इसी लिए जिंदगी का हर लम्हा मेरा गुरु बन के मेरे सामने ही रहता है। कितना कुछ है अभी सीखने को और जिंदगी है कि छोटी पड़ रही है।

तवे पर से अधपकी रोटी को गैस के बर्नर पर रख देने से वो फूल कर बॉल बन जाती है,यह मैने आठ साल की उम्र में सीख लिया था। हमारे घर में काम करने वाली सीमा ने खेल ही खेल में सिखा दिया था। और भी कई तरह की चीज़ें वो सिखाई और मैने सीखी। सीमा घर की नौकरानी थी, लेकिन मेरी गुरु बन चुकी थी।आज भी उसको आदर के साथ याद करती हूं और मिलने जाती हूं।

दादी मम्मी बुआ ये सब भी मेरी गुरु ही रहीं जिन्होंने घर गृहस्थी की बारीकियां सिखाईं।

जहां 24 इंची साइकिल को कैंचीमार तरीके से सिखाने वाली छोटी बहन थी, तो कार सिखाने वाला मेरा बेटा। ये दोनों भी गुरु की भूमिका में मेरे सामने आ जाते हैं।

12वीं की परीक्षा के बाद जब शौकिया एक स्कूल में पढ़ाने जाना हुआ तो वहां पता चला कि ये तो बड़ों कि दुनिया है और मुझमें काफी बचपना।वहां आपस में ही काफी राजनीति चलती थी। एक दूसरे को नीचा दिखाना, शिकायतें, बुराईयां उफ्फ मैं ऐसे माहोल में नहीं रह सकती थी। इसलिए मैंने पांच दिन में ही स्कूल छोड़ने का फैसला कर लिया।तब उस स्कूल की प्राध्यापिका ने बहुत प्यार से जो समझाया वो मेरी जिंदगी में बहुत काम आया।वो बोलीं कि यहां किसी की भी बातों को दिल पर न लेकर चैलेंज के तौर पर लो,अपने व्यवहार प्यार और इज्ज़त से सबका दिल जीतो।दुनिया में हर तरह के लोग मिलेंगे,उनसे कैसे भागोगी, सुसराल में सास ननद अगर कुछ बोलेंगी तो क्या उनको भी छोड़ दोगी? किसी को छोड़ना नहीं निभाना सीखो। यही मौका है,अपने व्यक्तित्व को निखारने का लोगों का सामना करो।

बस तभी से मैने हर तरह के हालात से सीखना शुरू कर दिया और मेरे व्यक्तित्व में निखार आता चला गया।

जो भी मिलता है खुश होता है और इसका सारा श्रेय मैडम रमन सिंह को देती हूं,कितनी आसानी से जीवन का इतना पाठ पढ़ा दिया।

अपने जीवन में आने वाले सभी गुरुजन का ह्रदय से आभार ।

डॉ.अर्शी जाफ़री ख़ान

स्वीकार करो जग का बंधन

गोस्वामी तुलसीदास के प्रति

कवि-कुल- चूड़ामणि महादिव्य–
हिन्दी जननी के प्रिय नन्दन ।
तुमने कुछ ऐसा मंत्र पढ़ा –
हो गये सुलभ श्री रघुनंदन ॥
तुम निष्काम राम-प्रेमी थे–
शक्ति-शील-सौन्दर्य पुजारी।
जड़-चेतन को किया राम मय–
भक्ति अजिर के अजर बिहारी॥
दी सुधा समन्वय की जग को –
विषमय-हलाहाल स्वयं पिया।
उच्छृंखल जीवन-सरिता को–
तुमने मर्यादा-सिन्धु दिया ॥
है भारत का हर घर हिमगिरि–
जिसमें 'मानस' लहराता है।
जो भी अवगाहन कर लेता–
वह भव-सागर तर जाता है।।
हिन्दी-साहित्य खरा सोना–
मानस बहुमूल्य सुहागा है।
इस निधि से वंचित रह जाये–
वह सचमुच मीरा अभागा है ॥
है मुझको दृढ़ विश्वास यही –
सुनते हो तुम सबका वंदन ।
प्रकटो तुलसी फिर एक बार –
स्वीकार करो जग का बंधन॥

कृष्ण कुमार
पारीक , जयपुर

अनुशासन

उन दिनों की बात है। जब मैं सरकारी मिडिल स्कूल में छठी या सातवीं का छात्र था। मेरी स्कूल दो पारी में चलती थी । पहली पारी प्रातः 7:00 बजे और दूसरी पारी दोपहर 12:30 बजे प्रारंभ होती थी । मुझे दूसरी पारी में जाना होता था। स्कूल प्रारंभ होने से पहले प्रार्थना सभा होती थी, जो स्कूल के भूतल के प्रांगण में होती थी। मेरी कक्षा का कमरा दूसरे तल पर था। छात्रों के पीने के पानी की सीमेंट की टंकी प्रथम तल के कोने के खाली स्थान पर रखी होती थी, जिसमें टूटियां लगी थी और हम सभी छात्र उससे पानी पीते थे ।

प्रार्थना सभा के पश्चात हम सभी छात्रों को अपनी-अपनी कक्षा में जाने के लिए कतार में जाना होता था। एक दिन भूतल से प्रथम तल की ओर आते समय मुझे विचार आया कि मैं पानी पीकर कक्षा में जाऊं । प्रथम तल पर पहुंचते ही जैसे ही मैं लाइन तोड़कर पानी पीने के लिए मुड़ा, तभी तड़ाक से मेरे गाल पर एक थप्पड़ पड़ा जो इतना जोरदार था कि मेरे गालों पर उंगलियों के निशान छप गए। मैंने सिर उठाकर देखा तो वहां स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री नंदलाल कोठारी खड़े हुए थे। उन्होंने तेज आवाज में कहा-' सीधे लाइन से कक्षा में जाओ।'

उस एक थप्पड़ ने मुझे अनुशासन का महत्व समझा दिया जो पूरे जीवन में मेरा मार्गदर्शन करता रहा और मुझे यह शिक्षा देता रहा है कि अनुशासन में रहो, अनुशासन में रहकर काम करो। आज मैं अनुशासित जीवन जी रहा हूँ।

दिलीप तंबोली,
अजमेर

जिसने इंसान बनाया...

गोदी में दुबका कर माँ ने
सही ग़लत समझाया
पापा ने बैठा कँधे पे
कभी डाँटा,कभी दुलराया
जाने अनजाने बातों में
संस्कार का बीज संभलाया
मीठे सपने बुन के माँ ने
मुझे शाला में पहुँचाया
गीली माटी पा गुरुओं ने
अक्षर दीप जलाया
सपनों ने भी ली अंगड़ाई
मुझमें विश्वास जगाया गुरुओं ने
की खूब खिंचाई
और कभी स्नेह लुटाया
मन आलोकित कर मेरा
कुछ विवेकवान बनाया
पथ प्रदर्शक बन कर मेरा पथ सुगम दिखलाया
इस अनगढ़ पत्थर को गुरु ने
घड़ घड़ इंसान बनाया
कैसे भूलूँ उपकार गुरु का जिसने इंसान बनाया
जिसने इंसान बनाया

ज्ञानवती सक्सैना
'ज्ञान', जयपुर

'गुरु है वो'

'गुरू है वो'
सर्वप्रथम पूजनीय है जो,
हर विपदा का निवारक है जो, गुरु है वो!
उलझन में जब घिरा हो मन,
ना दिखे जब कोई रास्ता,
तब मार्गदर्शन बन खड़ा है जो, गुरु है वो!
ना कोई वेशभूषा ना ख्याति है उनकी,
बस जीवन की जटिल समस्या को सुलझा दे,
जो गुरु है वो!
भवसागर है यह दुनिया सारी,
नैया बन पार लगा दे, जो गुरु है वो!
संसार की मोह माया में जब खोया हो मन,
ज्ञान रूपी ज्योति बन आँखें खोली जिसने, गुरु है वो!
ये ना सोचो किसे बनाऊं गुरु?
मुश्किल वक्त में जो थाम ले हाथ और कर हर विपदा का नाश,
गुरु है वो !!!

मिताली पारीक, जयपुर

"पुष्प सी वो मैडम"

बात उन दिनों की है जब स्कूल की पढाई खत्म करके महाविद्यालय में नया नया प्रवेश लिया था।नये सपने,नयी उमंगें सब कुछ नया नया सा ही तो था। स्कूल के बँधे बँधाये रुटीन से अलग कॉलेज के बिंदास वातावरण के प्रति उत्साह भी था मन में।

कॉलेज के प्रथम दिन की प्रथम क्लास थी। दर्शनशास्त्र का पीरियड था। दर्शनशास्त्र की मैडम थी इन्दिरा विश्नोई। अभी तक देखा नहीं था बस नाम ही सुना था सो उन्हे देखने की बहुत उत्कण्ठा थी।मन में यही विचार था दर्शनशास्त्र की मैडम है तो विषय का प्रभाव तो होगा ही जरूर अतिगम्भीर, सादा, बेहद संजीदा और सबसे अलग होगीं। और वाकई इन्दिरा मैम सबसे अलग ही तो थी।जैसे ही उन्होने क्लास में प्रवेश किया एक भीनी सी खुशबू से पूरा कमरा महक उठा।दूध सा श्वेत गोरा रंग, तीखी

नासिका, लिपिस्टिक से रँगे सुन्दर होंठ, काजल लगी हुयी आँखें, छोटे बाल जिन्हे रबड अथवा सुन्दर वक्कल से बाँधा गया था,मध्यम कद उस पर बड़े सलीके से पहने गये कपडे।सब जैसे देखते ही रह गये थे।मेरी सोच के विपरीत इन्दिरा मैम जीवन रस से भरी हुयी थी।खिला खिला सा जैसा उनका व्यक्तित्व था वैसा ही उनका सहायता परक व्यवहार था।मैडम को देखते ही जैसे एक शीतल ताजी बयार का सा अनुभव होता था। विश्नोई मैम का खिलखिला कर जोर से हँसना पूरे कॉलेज कैम्पस को गुँजित कर देता था। दर्शनशास्त्र जैसा शुष्क विषय भी उनके सान्निध्य में सरस लगने लगता था।किन्तु इन सबके साथ ही विश्नोई मैम की अपने विषय दर्शनशास्त्र पर पूरी पकड थी।कक्षा में फिलासफी के गंभीर विषयों को भी हंसते हुये सरल तरीके से समझा देती थी और हम सभी छात्राओं के सवालों का भी बखूबी निदान कर देती थी।

यह सच ही है कि इन्दिरा विश्नोई मैम का आकर्षक एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व दर्शनशास्त्र जैसे नीरस और उबाऊ विषय में भी जान डाल देता था।

अन्जना मनोज गर्ग, कोटा

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

03

जयपुर, मंगलवार, 07 सितम्बर, 2021

ग्रामीण क्षेत्र से इंडिया बुक ऑफ़ रिकाड्र्स तक का सफर प्रोफ़ेसर डॉ. शालिनी शर्मा के संग

सरताज सिंह

हर व्यक्ति के जीवन में शिक्षक की एक बहुत बड़ी भूमिका होती है क्योंकि एक शिक्षक ही ऐसा इंसान होता है जो अपने छात्र को हमेशा अपने से आगे बढ़ते हुए देखना चाहता है। इसी तरह से मेरे जीवन में भी बहुत सारे शिक्षको का योगदान रहा है। जिनसे मैंने अपने जीवन में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा प्राप्त की। इन सभी शिक्षको का मैं कभी कर्ज नहीं उतार सकता क्योंकि मेरे सभी शिक्षको ने मुझे शिक्षा के साथ-साथ जीवन में किस तरह से आगे बढ़ते हुए सफलता प्राप्त करनी है इसके बारे में मेरा हमेशा मार्गदर्शन किया। मेरे जीवन की सबसे प्रिय व हर-दिल अजीज शिक्षिका प्रोफेसर डॉ. शालिनी शर्मा रही। जोकि वर्तमान समय में मारकंडा नेशनल कॉलेज, शाहाबाद मारकंडा में एसोसिएट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान) के पद पर कार्यरत है। यह मेरे लिए इसलिए प्रिय शिक्षिका है क्योंकि मैं ग्रामीण इलाके का छात्र हूँ और जिस समय मैं अपनी 12वी की कक्षा पास करके कॉलेज में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए गया तो मेरे पास एक अच्छे मार्गदर्शक का आभाव था। परन्तु कॉलेज की उच्च शिक्षा की शुरुवात में ही मेरा विशेष लगाव डॉ. शालिनी शर्मा मैडम से हुआ। क्योंकि वे कक्षा में हर छात्र को शिक्षा के साथ-साथ अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करती थी। मैं भी मैडम के द्वारा दिए गए दिशा- निर्देशों का पालन करता था और विभिन्न कॉलेज स्तर की प्रतियोगिताओ में भाग लेता था। प्रो. शालिनी मैडम के द्वारा हमेशा से ही मुझे व सभी छात्रों को समझाया जाता था कि किसी भी प्रतियोगिता में हार-जीत मायने नहीं रखती है। किसी भी प्रतियोगिता में भाग लेना ही बहुत बड़ी बात होती है। एक दिन कक्षा में शालिनी मैडम के द्वारा एक कक्षा स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे मैंने भी अपने विचार लिखे और मैडम के द्वारा उसका मूल्यांकन किया गया। तो मैडम मेरी लेखन शैली से काफी प्रभावित हुए उन्होंने मुझसे कहा सरताज बेटा आप काफी अच्छा लिखते है। आपको निबंध लेखन प्रतियोगिताओ में भाग लेना चाहिए और साथ में यह भी कहा कि आपकी लेखन शैली को और किस तरह से अच्छा किया जा सकता है इसमें मैं आपका मार्गदर्शन करुँगी। प्रो. शालिनी मैडम के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए मैंने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ विभिन्न राज्य व राष्ट्रीय स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिताओ में भाग लेना शुरू किया। शुरुवात में इन प्रतियोगिताओ में मुझे पुरुस्कार प्राप्त नहीं हुए क्योंकि अभी मेरी शुरुआत हुई थी। शालिनी मैडम ने हमेशा ही मेरा उत्साहवर्धन किया और धीरे-धीरे मेरी लेखन शैली में काफी ज्यादा सुधार हुआ क्योंकि मैं निरंतर लिखता रहा। इसी बीच भारत में कोविड-19 महामारी की शुरुआत हुई जिस कारण से भारत सरकार के द्वारा पूरे देश में लॉकडाउन की घोषणा कर दी गयी। जिस कारण से सभी शिक्षण संस्थान बंद हो गए और लगभग सभी शिक्षण संस्थानों के द्वारा ऑनलाइन शिक्षा की शुरआत की गई और साथ ही छात्र घर बैठे अपनी प्रतिभा को भी निखार सके इसके लिए भारत के विभिन्न कॉलेज व यूनिवर्सिटीयो के द्वारा राज्य, राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर की निबंध लेखन प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया। शालिनी मैडम के द्वारा मुझे इन प्रतियोगिताओ की जानकारी दी जाती थी और साथ में इस प्रतियोगिताओ में अपना उच्च प्रदर्शन करके इनमे जीत कैसे प्राप्त की जा सकती है इसके बारे में मेरा मार्गदर्शन किया जिस कारण से मैंने पर्याप्त समय होते हुए लॉकडाउन में समय का सदुपयोग किया और निबंध लेखन प्रतियोगिताओ में भाग लेना शुरू किया। धीरे-धीरे जब इन प्रतियोगिताओ के परिणाम आने शुरू हुए तो मुझे प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त होने लगा। इससे मेरा और उत्साहवर्धन हुआ और मैं निरंतर प्रतियोगिताओ में भाग लेता गया जिस कारण से आज वर्तमान समय तक मैं प्रो. शालिनी मैडम के मार्गदर्शन में 45 राज्य, राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर की निबंध लेखन प्रतियोगिताओ में जीत प्राप्त कर चुका हूँ और निरंतर अभी भी इन प्रतियोगिताओ में भाग ले रहा हूँ ताकि मेरी लेखन शैली में और ज्यादा सुधार हो सके। इसके साथ ही मेरे 4 शोध-पत्र अब तक प्रकाशित हो चुके है और आगे भी मैं अपने इस कार्य को जारी रखूंगा। इन 45 राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिताओ में जीत मेरे लिए काफी बड़ी उपलब्धि थी जिस कारण से इंडिया बुक ऑफ़ रिकाड्र्स के द्वारा मेरी इन प्रतियोगिताओं में जीत को मान्यता देते हुए मेरा नाम इंडिया बुक ऑफ़ रिकॉर्ड के लिए चयनित किया गया और मैंने राष्ट्रीय स्तर पर रिकॉर्ड बनाकर अपने मारकंडा नेशनल कॉलेज व शिक्षकों का नाम रोशन किया। आज अगर मैं इस उपलब्धि को प्राप्त कर पाया हूँ तो इसका मुख्य श्रेय मेरी प्रिय शिक्षिका प्रोफेसर डॉ. शालिनी शर्मा को जाता है। क्योंकि मैडम शालिनी के द्वारा ही मेरी इस प्रतिभा की पहचान की गई। अगर मेरा इनसे संपर्क न हुआ होता तो मैं ग्रामीण इलाके से इंडिया बुक ऑफ़ रिकाड्र्स तक कभी भी नहीं पहुँच सकता था। इसलिए शिक्षक दिवस के उपलक्ष पर मैं प्रोफ़ेसर डॉ. शालिनी शर्मा मैडम का दिल की गहराइयों से धन्यवाद करता हूँ। किसी भी आम छात्र को एक मुकाम तक पहुचाने में शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसलिए हर छात्र अपने शिक्षक का जीवन भर कर्जदार रहता है। मैं भी प्रो. शालिनी शर्मा मैडम का के द्वारा दिए गए विशेष मार्गदर्शन का हमेशा ऋणी रहूँगा। शिक्षक दिवस के उपलक्ष में मेरा उन सभी गुरुजनों को प्रणाम जिनसे मैं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कुछ सीख सका और अंत में मैं अपने सभी शिक्षकों के लिए कुछ पंक्तिया कहकर सभी गुरुजनों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होने मुझे जीवन में संघर्ष करते हुए आगे बढना सिखाया है।

'भगवान ने दी है ज़िन्दगी,
माता-पिता ने दिया प्यार
ज़िंदगी की राह पर चलना सिखाने के लिए
मैं अपने गुरु का हूँ शुक्रगुज़ार'

संस्मरण

'ओए अन्नू तूने क्या कर दिया बच्चे'

'शिक्षक दिवस' यह नाम मस्तिक में आते ही...मन स्कूल के गुजरे हुए दिनों की और चला जाता है। मुझे याद है कई सप्ताह पहले से ही इस दिन की तैयारी में हम सभी सहपाठी जुट जाते थे... और अपने प्रिय शिक्षकों को कौन सी गिफ्ट देनी है। और उस दिन कौन से कार्यक्रम प्रस्तुत करने हैं। इन सब चीजों की एक लिस्ट हम सभी मिलकर तैयार कर लेते थे.. मुझे शुरु से ही नाचने गाने का बड़ा शौक रहा है। और इसी वजह से मंच संचालन का कार्य मुझे और मेरी एक मित्र को सौंपा गया था।

हम दोनों ने तय किया कि कार्यक्रम की शुरुआत में स्वागत गान के बाद क्लासिकल नृत्य रखा जाएगा जिसमें राधा और कृष्ण की जोड़ी अपने नृत्य के द्वारा उपस्थित शिक्षक एवं मेहमानों का स्वागत करेंगे .....तैयारियां करते करते शिक्षक दिवस.. आखिरकार पहुंच ही गया हम दोनों ने साउंड सिस्टम वाले के साथ मिलकर सारी तैयारियाँ कर ली.. उसे अच्छे से समझा दिया कि कौन सा गाना कब बजेगा ...नियत समय में मुख्य अतिथि आए और उनके अभिवादन के लिए सर्वप्रथम मेरी सहपाठियों ने स्वागत गान गाया ...उसके बाद स्वागत नृत्य का कार्यक्रम था । स्टेज को हम सबों ने अपनी क्षमता के अनुसार यमुना नदी के तट वाले दृश्य पर परिवर्तित कर दिया था।

राधा और कृष्ण के किरदार में हमारे साथी सहपाठी अपनी अपनी पोजीशन लेकर तैयार खड़े थे .मैं और मेरी मित्र बहुत खुश थे.. कि हम दोनों की मेहनत रंग लाने वाली है!

हम दोनों ने साउंड सिस्टम वाले की तरफ देखा और उसे इशारा किया कि और फिर पर्दा हटता है। और यूँ लगने लगा कि सारा वृदांवन स्टेज पर उतर आया हो.. हम सभी इस स्वागत नृत्य को लेकर बहुत रोमांचित थे क्योंकि हम सबो ने इसके लिए बहुत तैयारियां की थी ..मेरे दिल की धड़कन धक-धक कर रही थी। क्योंकि मैं चाहती थी कि जल्दी से गाना शुरू हो और सभी इस नृत्य का आनंद लें परंतुत अचानक ही एक गाना बजने लगता है..'सरकाई लो खटिया जाड़ा लगे जाड़े में बलमा प्यारा लगे' हे भगवान..!!

थोड़ी देर के लिए तो मुझे कुछ समझ नहीं आया लेकिन मैंने तुरंत ही स्थिति संभालते हुए माइक अपने हाथों में ले लिया और कहा कि हो सकता है कुछ टेक्निकल प्रॉब्लम आ गई हो हमें माफ कीजिएगा और फिर से मैंने माइक वाले बंदे की ओर देखा और कहा दोबारा से स्टार्ट करो उसके बाद उसने स्टार्ट किया और जो गाना हमने सेलेक्ट किया था वह बजने लगा और नृत्य भी शुरू हो गया सभी काफी खुश थे। लेकिन अचानक ही दूसरा गाना बजने लगा 'भरो मांग मेरी भरो अंग से अंग लगा के प्रेम सुधा बरसा के' भगवान मैंने अपना माथा पीट लिया और फिर से हमने वह गाना बंद किया उसके बाद तो मेरी जो हालत हुई बता नहीं सकती हूँ।

अचानक हुई इस घटना से हम सभी आश्चर्यचकित रह गए थे और एक दूसरे को देखने लगे.. मेरे तो काटो तो खून नहीं वाली स्थिति हो गई हो गई थी क्योंकि सबसे ज्यादा ज़िम्मेदारी मेरी थी और यह होना मतलब बहुत बड़ी बात थी।

मैं झट से स्टेज के पीछे से दौड़ने लगी और माइक वगैरह का काम देख रहे लड़के के पास पहुंची.. और उसे लगी डाँटने.. उसने कहा आपने जो दिया था मैंने वही बजाया और मैं भी क्या बोलती उसे.. पता नहीं किसकी गलती थी। लेकिन जो होना था वह हो चुका और उस दिन मुझे बहुत डाँट पड़ी अपने शिक्षकों और अपने मित्रों से, लेकिन ये बाद में पता चला कि यह बदमाशी हमारी ही स्कूल के कुछ सीनियर छात्रों की थी जो हमे परेशान करना चाहते थे। लेकिन आज भी जब भी यह घटना मैं याद करती हूँ, मुझे गुस्सा तो आता है और हंसी भी आती है। सबसे ज्यादा याद हमारी जो वाइस प्रिंसिपल मैम थी..वो पंजाबी थी.. उनकी बात याद करके आती है जैसे ही यह गाना बजने लगा था.. कुछ देर के बाद मैडम ने वहीं से चिल्लाते हुए मुझे कहा था 'ओए अनु तूने क्या कर दिया. बच्चे' और झेंपते हुए मैंने कहा था कि 'मेम जी पता नहीं आप तो बस मुझे माफ करो कैसे हो क्या मुझे नहीं पता।' आज भी अपने छात्रों को शिक्षक दिवस की यह घटना में जरूर सुनाती हूँ, और और उनसे यह जरूर कहती हूँ, कि आखिर तक दूसरों पर विश्वास मत रखना खुद पर विश्वास रखना ही बहुत बड़ी जीत होती है यह मंत्र कभी मत भूलना..।

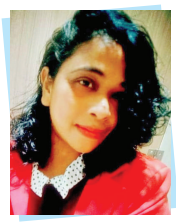

अनु लागरी
(झारखंड)

बिना हथेली की मुट्ठियाँ

अंगुलियाँ पढ़ रही हैं चेहरों को
नाखूनों की मदद से

उनके समर्थन में जीवित हो उठे हैं
पाषाण पिरामिडों में बंद
सभ्यताओं के डर

हम अकेले-अकेले
मुट्ठी में क़ैद करना चाहते हैं
समय का निर्वात

बिना हथेली वाली मुट्ठियाँ
इन दिनों हवा में तनी हुई हैं

रास बिहारी गौड़

कविता

रितेश कुमार शर्मा 'पथिक'

शिक्षक...

अंधकार से अरुणाई की ओर हमें ले जाता है।
घोर निशा के आलम में भी भोर हमें दे जाता है।
जिसकी बातें बीजमंत्र सी सबका दिल छू जाती है।
जिसकी जीवन चर्या नन्हे बालक को ललचाती है।
मात- पिता संगी साथी -सा हाथ हमें सहलाता है।
कर्तव्यनिष्ठ और कर्म प्रणेता ही शिक्षक कहलाता है।।1।

खुद से ज्यादा फ़िक्र जिसे रहती औरों के काल की।
जिसकी चाहत कभी नहीं थी दुनियां के जयमाल की।
जिसका जीवन चरित टिका है नैतिकता की सीढ़ी पर।
जिसनें जीवन खपा दिया है आने वाली पीढ़ी पर।
जो गैरों की हंसी देखकर मंद- मंद मुस्काता है।
कर्तव्यनिष्ठ और कर्म प्रणेता ही शिक्षक कहलाता है।।2।

जो सुख दुख का साथी पैरोकार सनातन संस्कृति का।
वेद पुराणों के गौरव का पुरा पुरातन झंकृति का।
जिसके रोम- रोम से आती मातृभूमि की खुशबू गीती।
जिसके आगे आधुनिकता लगती है हमको झूठी।
जो निज भाषा के गौरव को गा-गाकर इठलाता है।
कर्तव्यनिष्ठ और कर्म प्रणेता ही शिक्षक कहलाता है।।3।

जो नेता अभिनेता चिंतक कुशल प्रबंधन करता है।
जो दुनियां की रीति -नीति का अभिनंदन करता है।
जिसके जहन में आधुनिकता प्राचीनता दिल में बसती।
जिसके हर क्रियाकलाप में निज संस्कृति पहले हंसती।
जो समाज का पालक-पोषक सामाजिक कहलाता है।
कर्तव्यनिष्ठ और कर्म प्रणेता ही शिक्षक कहलाता है।।4।

जो उदार है क्षमाशील भी सहनशीलता रखता है।
सुपरमेन दुनियां में शिक्षक स्वाद सभी वो चखता है।
ब्रह्मा -विष्णु - रुद्र देव से पहले पूजा जाता है।
दुनियां में माता-सा दर्जा बस शिक्षक ही पाता है।
जो बच्चों में बच्चा बनकर अपना मन बहलाता है।
कर्तव्यनिष्ठ और कर्म प्रणेता ही शिक्षक कहलाता है।।5।

डॉगी से हमारा रिश्ता कैसे हो मज़बूत

बच्चों की दुनिया...

प्यारे बच्चों को कविता आंट
का ढेर सारा प्यार

डॉगीज़ की बात करते हुए इतना लंबा अरसा गुज़र गया, पर बातें हैं कि ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रही हैं। खूबियाँ ही इतनी सारी हैं हमारे इन दोस्तों की! अब देखिये न्, एक बेहद ज़रूरी बात ये है कि इन्हें दृष्टि-बाधित मनुष्यों के लिए 'सीइंग -आई-डॉग्स' के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है, जिन्हें हम ' गाइड-डॉग्स ' के नाम से बेहतर जानते हैं । इसके लिए क़रीब तीन महीने इन्हें प्रशिक्षित किया जाता है जिसमें न केवल ये मालिक के ऑर्डर को 'ओबे' करना सीखते हैं, बल्कि इन्हें कौनसे ऑर्डर को ' डिसओबे' करना है ये भी सिखाया जाता है । आप सोचेंगे कि ' डिसओबे ' क्यों! और ये वाजिब भी होगा । लेकिन ये इसलिए ज़रूरी है कि कई बार इनके दृष्टिहीन लोगों को ये नहीं पता होता है कि चलते समय इस वक़्त आगे बढ़ना, या सड़क पार करना या सीढ़ी चढ़ना ठीक रहेगा या नहीं। तब अगर वो ऑर्डर देता है कि ,' गो ' , तो उनका गाइड-डॉगी उनकी आज्ञा अवहेलना करके दुर्घटना होने से बचा लेगा । है न ! इसलिए ऐसा करना पड़ता है ।

गाइड-डॉग के प्रशिक्षण हेतु सामान्यतः जर्मन शेपर्ड , लैब्राडोर , गोल्डन-रिट्रीवर ब्रीड्स के डॉग्स ज़्यादा सुटेबल होते हैं । इन्हें सबसे पहले रोज़ाना 'कम',

'सिट', 'लाई-डाउन', 'फेच', 'गो','रन' इस तरह की एक्सरसाइज़ेज़ ' कराई जाती हैं जिन्हें हम ' सैटिंग-अप-एक्सरसाइज़ ' कहते हैं। जब ये अच्छी तरह से ट्रेन हो जाते हैं तो इनको ख़ास क़िस्म की यू-शेप्ड 'गाइड-हारनेस' पहनाई जाती है जो आम पेट-डॉग्स की हारनेस से अलग तरह की होती है । इन्हें अपने ह्यूमन

के बायीं तरफ़ थोड़ा आगे चलने की ट्रेनिंग दी जाती है और ट्रेनर ख़ुद को ब्लाइंड-फ़ोल्ड करके यानी कि ख़ुद ब्लाइंड बनकर इनको ट्रेन करता है । कभी वो जानबूझकर किसी चीज़ से टकरा जाता है और ये डॉग्स उसको बचाकर आगे ले चलते हैं। इन्हें ट्रैफ़िक को वॉच करना, मोडों पर रुकना, कारों को पास होने देना जैसी बहुत सी बातें सिखाई जाती हैं ।

असली मास्टर के पास भेजने से पहले दो हफ़्ते तक ट्रेनर और डॉगी की बहुत अच्छी बॉडिंग हो जाती है । डॉगी बड़ी चतुराई से भरी भीड़ में से भी दृष्टिहीन मास्टर को सकुशल बचा कर लाना सीख लेता है क्योंकि अब तक वो ट्रबल-स्पॉट्स की पहचान कर चुका होता है ।

ये सच्ची कहानी सुनिये । इंग्लैंड के उत्तरी-पश्चिम इलाक़े में एक सेरेमोनियल काउंटी है 'लैंग्कुशा ', जिसकी कैपिटल प्रैस्टन के एक स्पेशल-स्कूल में जोएन पढा करती थी । जोएन दृष्टिहीन होने के कारण सामान्य बच्चों की तरह उन्मुक्त होकर नहीं जी सकती थी । इस बात से उसे बेहद प्यार करने वाले माता-पिता दुःखी रहते थे । पर ज़िंदगी तो जीना ही होगी न् , तो क्यों न पूरी तरह से जिया जाय । स्कूल में जोएन को इन वंडरफुल दोस्तों, यानी कि ख़ास क़िस्म के डॉग्स के बारे में बताया गया था , जिन्हें बोल्टन के एक ब्लाइंड स्कूल में पर्सेंक्टिव ओनर के साथ तीन हफ़्तों तक ट्रेनिंग दी जाती थी जिससे दृष्टिहीन लोग भी अपनी ज़िंदगी को सुंदर तरीक़े से जी सकें। जोएन ने वहाँ 'जूलिा' नामक लैब्राडोर डॉगी के साथ ट्रेनिंग लेकर अपने घर पहुँचने पर बेहद खूबसूरत ज़िंदगी जी ।

तो आप समझे न कि इंसानों के लिए डॉग्स कितने ज़रूरी होते हैं! अगली बार फिर कुछ रोचक जानकारी के साथ मिलती हूँ , तब तक के लिए टा-टा ।

डॉ कविता माथुर

शेष पेज एक का...

वह एक ...

उद्धव का कोई आपराधिक इतिहास नहीं था और न उससे लूट का कोई सामान ही बरामद हुआ था। मैंने तत्काल तीनों केस खत्म करने के आदेश दिए। उद्धव की आंखों में खुशी के आंसू थे। कुछ देर तक वह रोता रहा। उसके संभलते ही मैंने पूछा - 'अब इसके बाद क्या करोगे, उद्धव ?' उसने कहा -'इस इलाके में रहूंगा तो जिन्दा नहीं बचूंगा। मैं कमाई करने पंजाब चला जाना चाहता हूं।' मेरी जेब में डेढ़ हजार रूपये थे जो मैंने उसे दे दिए। वहां पर आसपास के गांवों के कुछ लोग भी जमा हो गए थे। उन्होंने आपस में चंदा कर उसे तीन हजार रुपए और दिए। थाने से खबर मिली कि अगले ही दिन वह पंजाब चला गया। फिर कभी दुबारा उससे भेंट नहीं हुई और न उसके बारे में कुछ सुनने को मिला । बीस साल बाद एक दिन उसका फोन आया तो मैं उसकी आवाज़ पहचान नहीं सका। अपना परिचय देते हुए उसने बताया कि उसकी आपबीती सुनकर अमृतसर के एक लेखक ने उसे मेरा नंबर दिया है। वह खुशी के मारे रो रहा था। मेरे बहुत समझाने के बाद वह शांत हुआ। उसने कहा कि दस साल तक पंजाब के खेतों में मजदूरी करने के बाद उसने चाय-नाश्ते का एक छोटा होटल खोल लिया है। होटल अच्छा चल रहा है और वह एक व्यवस्थित जीवन जी रहा है। घर में बीवी है और दो प्यारी-प्यारी बेटियां भी। उसने बताया कि वह और उसका परिवार मुझे बहुत याद करता है। उद्धव की आवाज़ ने मुझे भावुक कर दिया। वह मेरे सेवाकाल का पहला शिक्षक था। उसके साथ बीते कुछ घंटों ने मुझे सिखाया कि पुलिस के हाथों न्याय तबतक संभव नहीं है जबतक पुलिस के अधिकारियों के पास संवेदनशील ह्रदय, आमजन से सीधा संवाद और संचिकाओं तथा गवाहों के पार देखने और महसूस करने की आंतरिक शक्ति न हो ! मैंने किसी भी मामले की विवेचना में उस सबक को याद रखा। हर मामले में इंसाफ का दावा तो कोई भी पुलिस या न्यायिक व्यवस्था नहीं कर सकती, लेकिन आज यह सोचकर मुझे संतोष ज़रूर है कि अपने सेवाकाल में मुझसे बहुत कम ग़लतियाँ हुईं।

(लेखक पूर्व आईपीएस हैं)

'गुरु की...

कुछ स्तर पर इसका व्यवसायिकरण अवश्य हुआ है पर इसकी मूल भावना और विचारधारा आज भी बरकरार है। हमारे कयी कवियों, लेखकों, और समाज सुधारकों ने गुरू की महिमा का गुणगान करते हुए अपने भावों और विचारों को अपनी पंक्तियों में उद्धृत किया है।

'गुरु गोविंद दोनों खड़े काके लागूं पाय बलिहारी गुरु आपकी गोविन्द दियो बताए'।।

प्रस्तुत पंक्तियां बहुत ही प्रचलित और सार्थक है, जो हमें सीख देती है कि गुरु हम सभी के जीवन का अभिन्न हिस्सा है, यदि गुरु नहीं तो ज्ञान नहीं है, और ज्ञान नहीं है तो ईश्वर को नहीं पाया जा सकता। अपितु यह एक आध्यात्मिक पहलू है अतः जीवन में इसकी सार्थकता भी विशाल है। गुरु की महिमा अपरंपार है, गुरु की महिमा और उनके अस्तित्व को समझना ही गुरु का सच्चा सम्मान है। जब हम गुरु की महिमा को विस्तृत रूप में स्वीकार कर लेते हैं तभी हमें सच्चे आनंद का अनुभव होता है, गुरु का सानिध्य जीवन में अंधकार को मिटाकर सारे दुखों का नाश करता है, क्योंकि गुरु ही वह कारक है जो मनुष्य की चेतना की माला और उसमें समाहित मनकों के अंतर को समझाते हैं । गुरु केवल ज्ञान ही नहीं देते,वह आपमें जीवन शक्ति जागृत करते हैं, गुरु के सानिध्य में व्यक्ति जीवंत हो उठता है। ज्ञान की पराकाष्ठा और जागृत ज्ञान केवल गुरु की उपस्थिति से ही संभव है। गुरु हमें केवल बुद्धि का ही नहीं, ज्ञान का भी आह्वान करते हैं, बुद्धि में ही ज्ञान निहित होता है। ज्ञान के बिना व्यक्ति पशुवत जीवन जीता है, शिष्ट होना और जीवन में गुरु का होना व्यवहारिक है, यदि जीवन में गुरु न हो तो तो इसका अर्थ है जीवन शिष्टताविहीन है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें जीवन में ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला, प्राचीन काल से ही हमारे ऋषि-मुनियों ने गुरू और शिष्य परंपरा को बचा कर रखा है और शिक्षक दिवस वह दिन है जब हम अपने गुरुओं के प्रति सम्मान और आभार का अनुभव करते हैं यह वह अवसर है जो हमें याद दिलाता है कि जीवन को ज्ञान के साथ,ज्ञान में, एवं ज्ञान के लिए जीना चाहिए। ज्ञान ही वह शक्ति है जो विश्व की शांति के लिए आवश्यक है, जो विश्व से दुख रूपी अन्धकार को मिटा सकता है, यदि ज्ञान प्रसन्नता नहीं ला सकता तो कुछ और भी प्रसन्नता नहीं ला सकता। अतः हमारा दायित्व है कि हम अपने गुरुओं से प्राप्त ज्ञान विवेक और समाधान रूपी उजियारे को विश्व शांति के लिए चारों ओर फैलाएं। हमारे जीवन की आधारशिला गुरु की दी हुई शिक्षा से मजबूत बनती है क्योंकि ज्ञान केवल पढ़कर प्राप्त नहीं किया जा सकता,ज्ञान चेतना का गुण है, जीवन का गुण है, जीवन में गुरु की उपस्थिति चेतना के स्तर को विस्तृत और परिवर्तित करती है, इसलिए कहते हैं कि जिसके साथ गुरु होते हैं, जिन्हें गुरु का सानिध्य मिलता है वे जीवन में हर क्षण 'अमृतपान' करते हैं और जिसके पास गुरु नहीं वह ज्ञान रूपी अमृत से वंचित और प्यासे रह जाते हैं। जीवन में किसी महान व्यक्तित्व को गुरु के रूप में स्वीकार करना और उनके बताए हुए मार्ग पर चलना ही गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा होती है। भारत में एकलव्य की प्रसिद्ध कथा कही जाती है, एकलव्य को गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा का प्रतीक माना जाता है, जिस तरह से एकलव्य ने गुरू द्रोणाचार्य को अपना गुरु मानकर उनकी मूर्ति के समक्ष धनुर्विद्या सीखी और अस्मर्णीय धनुर्धर बना। अतः, भारत यदि आज विश्व गुरु बनने की दिशा में अग्रसर है तो इनमें महान शिक्षकों के योगदानों की महती भूमिका परिलक्षित होती है!

याद रखें, ज्ञान सूचना नहीं है, यह चेतना के विकास का अदभुत गुण है।

(लेखिका: 'निदेशक' विश्व शांति समिति
भारत एवं अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन
छत्तीसगढ़ भिलाई से हैं)

गुरु की गहराई गुरु...

मगर उसने कहा अब कोई उपाय नहीं है,मैं चुनौती अंगीकार कर लिया हूँ,यह हमारे धर्म पर हमला है,यह हमारी आत्मा पर चोट है,मैं नपुंसक नहीं हूँ–वह बड़ी–बड़ी बातें करने लगा' !उसने कहा कि मैं तो यहीं रुकूँगा।वह रुक ही गया। जब संदेशवाहक पहुँचा,तो एक ही व्यक्ति पहुँचा था।लेकिन उस आश्रम को बनाने वाले गुरु ने कहा – तो एक साथी आ गया। यह तो बताओ गुरु ने भेजे कितने थे? संदेशवाहक ने कहा – क्या आपको भी यह ख्याल था कि गुरु ज्यादा भेजेगा?उसने कहा कि निश्चित।क्योंकि सौ चलते हैं तब कहीं एक पहुँचता है। मैने एक माँगा था,क्योंकि अगर मैं सौ माँगता तो वह हजार भेजता।इसलिए मैंने एक माँगा था कि सौ तो वह भेजने ही वाला है।

ऐसी ही यात्रा है। दुर्गम है। पहाड़ों की है। यहाँ अगर सौ साथी चलेंगे,तब एकाध बच जाए तो बहुत।

(लेखक उपनिदेशक भ्रष्टाचार
निरोधक ब्यूरो,जयपुर हैं)

संसार में कोई गुरुहीन...

परंतु इसी बहाने इस शब्द को एक नया आयाम मिलता है- गुरु को सर्वत्र ही दीपक कहा जाता रहा है, वह जो सहज ही आलोकित कर दे, संपूर्ण दृश्य दिखा दे। अगुरु बहुत भिन्न है। वह दृश्य नहीं, गंध का हेतु है। तो अगरबत्ती स्व-अर्जित गुरुत्व की रूपक हो सकती है। क्या पता, उसका इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता सुलगना किसी को अंतर्मन की साधना का बिंब लगा हो, और अगरबत्ती अगुरुता की पदावली में बँध गई हो। अगरबत्ती शलाका सी है, किंतु ज्ञानांजन शलाका सी नहीं है। वह धूमायित है, किंतु कज्जलमयी नहीं है। वह धूम की चंदन है। उसकी गंध बता देती है, भीतर कुछ है, जो दग्ध हुआ है, बना ही दिया है, अंतस् को तपस्वी। जो भी हो, यह अगुरु शब्द भी रुचिर तो है ही। सुना है, कुछ लोग लोबान जलाते हैं, आत्माओं को बुलाने के लिए भी, भगाने के लिए भी। इस्लाम में इसकी विशेष मान्यता है। यह लोबान भी धूप की सामग्री हो सकती है। संभव है कभी होती भी रही हो। कई बार मन स्वयं ही किसी की आत्मा का प्रतिबिंब बन जाना चाहता है। चाहता है कि दर्पण बन जाए, जिसमें किसी की आत्मा प्रतिबिंबित हो जाए। बहुधा यह धर्म में नहीं, प्रेम में होता है। कहते हैं, अध्यात्म का गुरुत्व भी प्रेम-सा होता है, सब नहीं बन सकते सबके गुरु या कि शिष्य। **लेखक आईएएस अधिकारी हैं।**

बाबा-ऐ-तालीम मरहूम डॉ मुमताज़ अहमद ख़ान साहब की सालगिरह पर दिली जज़्बात

छबड़ा में आयोजित सेमीनार...

अल अमीन सोसायटी बैंगलोर की भव्य शैक्षणिक ईमारतें...

श्रद्धांजलि...

आज़ाद हिंदुस्तान में तालीम की दुनिया में जितना ख़ूबसूरत तआवुन डॉक्टर मुमताज़ अहमद ख़ान साहिब का रहा है, मेरी जानकारी में इतना किसी दूसरे ने अंजाम नहीं दिया है।

अगर मुझे हिंदुस्तान में सबसे ज़्यादा पसंदीदा एक शख़्स को चुनने का कहा जाये जिन्हें मैं जानता हूँ तो मैं बिना किसी झिझक के डॉक्टर मुमताज़ साहिब को चुनूँगा ।

आप एक चलती फिरती लीडरशिप की पाठशाला रहे हैं जिनसे मैंने बहुत कुछ सीखा है।

ए. आर. ख़ान साहिब के ज़रिये मैं मुमताज़ साहिब तक पहुँच पाया फिर हमें छबड़ा में आपका इस्तक़बाल करने का ख़ूबसूरत मौक़ा मिला जो हमारे लिये यादगार रहा जिसमें पुलिस, प्रशासन, न्यायपालिका, पत्रकारिता, राजनीति हर क्षेत्र की नामी हस्तियों को शामिल किया ।

Al-Ameen Movement पर अंग्रेज़ी में एक बुकलेट साझा की गई थी जिसका हिंदी में तर्जुमा करने की ज़िम्मेदारी मुमताज़ साहिब ने मुझे दी, हिंदी की बुकलेट उनकी सालगिरह 6 सितम्बर को बंगलुरू में रिलीज़ करना थी लेकिन अचानक 1 सितम्बर 2013 को मेरी वालदा का इंतक़ाल हो गया। मैं बेहद ग़मगीन, मायूस था, मैं ने उन्हें यह ख़बर पहुँचाई और बंगलुरू नहीं पहुँच पाने की माफ़ी माँगी। मुमताज़ साहिब ने फ़ौरन इजाज़त दे दी लेकिन मेरा दिल नहीं माना और दिल को मज़बूत रख कर 4 सितम्बर को बंगलुरू के लिये रवाना हो गया।

एयरपोर्ट पर मुमताज़ साहिब ख़ुद रिसीव करने आये और मुझे होटल में छोड़ कर गये। ऐसे ग़मगीन वक्त में भी उनके प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिये शुक्रिया अदा करने लगे।

दूसरे दिन सुबह आने का कह कर मुमताज़ साहिब विदा हो गये।

दूसरे दिन ठीक 10 बजे जब कमरे से तैयार होकर मैं होटल की लॉबी में पहुँचा तो मुमताज़ साहिब पिछले 15 मिनट से मेरा इंतज़ार करते मिले, मैं पानी-पानी हो गया हालांकि ठीक वक्त पर मैं आ गया था लेकिन एक सबक़ सीखा कि किसी भी हालात में देरी से नहीं पहुंचो बल्कि कुछ पहले ही पहुंचने की कोशिश करो।

दिन भर मुमताज़ साहिब ने मुझे कई कॉलेज, स्कूल, इंस्टिट्यूट दिखाये और शाम को जिस प्रोग्राम में मेरी तर्जुमा की गई किताब को रिलीज़ किया जाना था वहाँ ले गये ।

वह प्रोग्राम मेरी ज़िंदगी के सबसे ख़ूबसूरत प्रोग्रामात में एक था।

वहाँ फिर मैंने वक्त की पाबंदी का सबक़ लिया।

तयशुदा से 1-2 घण्टा देरी से प्रोग्राम शुरू करवाने की हमारी आदत से जुदा जो कुछ वहाँ मैं ने देखा, वह ज़िन्दगी में पहली बार था ।

प्रोग्राम में मुमताज़ साहिब मुझे अपने साथ लेकर गये, तक़रीबन 5-6 हज़ार लोगों की भीड़ में मुझे सबसे आगे बिठाया गया ।

प्रोग्राम शाम के 7 बजे शुरू होने वाला था। हम 6.45 पर ही अपनी अपनी जगह पर बैठ चुके थे। प्रोग्राम अनाउंसर पोडियम के पास खड़ा हुआ अपनी घड़ी देख रहे थे और जैसे ही 7 बजे उन्होंने प्रोग्राम शुरू कर दिया।

इतनी वक्त की पाबंदी मैं ने अपनी ज़िंदगी में पहली बार देखी। जिस तरह मुझे स्टेज पर बुला कर मेरी हौसला अफ़ज़ाई की, सम्मानित किया,वह मैं नहीं भूल सकता।

मैंने बहुत बारीकी से मुमताज साहिब की ज़िन्दगी और काम करने का तरीक़ा देखने समझने की कोशिश की तो यही पाया कि किसी मिशन को कामयाब करने के लिये एक इंसान कुछ नहीं कर सकता, उसे क़ाबिल साथियों की टीम बनाना ही होगी और ऑर्गेनाइज़ेशन को उनके हवाले छोड़ देना होगा।

मुमताज़ साहिब ने ऐ. आर. ख़ान साहिब को और ऐसे क़ाबिल साथियों को अल अमीन मूवमेंट में जोड़ा और दुनिया भर में तालीम के लिये वो इंस्टिट्यूट बना गये जो आने वाले वक्त में लाखों इंसानों की ज़िंदगी को तालीम से रोशन करेंगी। उनके दिल में तमन्ना थी कि राजस्थान में भी अल अमीन एज्यूकेशनल सोसायटी की शुरुआत हो। मैंने छबड़ा में एक स्कूल शुरू कर दिया है। हमारी कोशिश होना चाहिये कि उनके ख्वाब को मुकम्मिल कर तालीम की कमी को दूर करने में अपनी हरचंद कोशिश कर उनके ख्वाबों को मुकम्मिल करें, यही उनके लिये सच्ची खिराजे अक़ीदत रहेगी ।

■ रिज़वान एजाज़ी

> नौजवानों को सलाह है कि ग़लत नुक्ताचीनी, आलोचना से भड़कें नहीं, उन्हें नज़रअंदाज़ करें, आलोचना के जवाब में जाति, मज़हब की सोच से ऊपर उठ कर इंसानियत की सच्चाई व ईमानदारी से ख़िदमत करें ।
> डॉ. मुमताज़ अहमद खान

बैंगलोर में अल अमीन हिन्दी पुस्तक का विमोचन

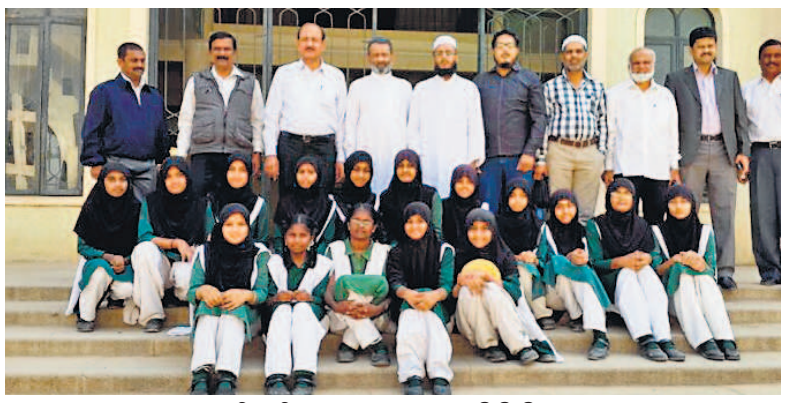

अल अमीन टीम व राजस्थान का प्रतिनिधि मण्डल।

श्रद्धांजलि... बाबा ए तालीम डॉ. मुमताज़ अहमद ख़ान

तालीम की एक मशाल-दक्षिण के सर सैय्यद

1935 में हिन्दुस्तान के मद्रास शहर में एक सितारा नामूदार हुआ जिसने मेडिकल की डिग्री हासिल की और लोगों को जिस्मानी अमराज़ का इलाज करने के बजाय, लोगों की ख़िदमत में ऐसा रास्ता चुना जो जिस्मानी, ज़हनी और पीढ़ियों तक फायदा पहुंचाने और आदमी को इंसान बनाने वाला रास्ता यानि रास्ता-ए-तालीम। 1966 में बैंगलोर शहर में अस्पताल का उद्घाटन, के प्रोग्राम को खारिज कर उसकी जगह अल अमीन डिग्री कॉलेज खोल दिया जो डॉ. मुमताज अहमद खान को 60 बरसों की तालीमी फील्ड में जुनूनी मेहनत और इबादत के बाद बाबा-ए-तालीम कहलाऐ और अल-अमीन तालीमी मिशन के संस्थापक बनकर दिन दूनी और रात चौगनी तरक्की के बाद 27 अप्रैल 2021 को लाखों घरों में तालीम और रोजगार व तरक्की के चिराग़ जलाकर चले गये। डॉ. साहब ने अल-अमीन एज्यूकेशनल सोसाइटी 1966 में स्थापित की और ताजिंदगी उसके अध्यक्ष बने रहे। 60 वर्ष के दौरान बीजापुर का मेडीकल कॉलेज, बैंगलोर में लॉ कालेज, इंजीनियरिंग कॉलेज, पॉलोटैक्नीक, पोस्ट कॉलेज, मैनेजमेंट कॉलेज, नर्सिंग कॉलेज तथा फैशन टैक्नोलॉजी के इदारों के साथ कर्नाटक, केरल, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडू व असम में सैकड़ों स्कूल व कॉलेज स्थापित किये व स्थापित करने में मदद की। इस समय इन सब इदारों की संख्या 250 से भी ज्यादा है।

डॉ. साहब की दिली तमन्ना थी कि उत्तरी राज्यों में भी शिक्षा की मशाल बड़े पैमाने पर जलायी जाए, लेकिन उन्हें अफसोस रहा कि जितना वह चाहते थे उतना स्थानीय दिलचस्पी न होने की वजह से नहीं हो सका। इसके लिए उन्होंने यूपी, बिहार, राजस्थान और पंजाब के कई भ्रमण भी किये। 2014 में बैंगलोर में यूपी के शिक्षा से जुड़े करीब 200 लोगों का एक तालीमी वर्कशॉप भी कराया जिसके कुछ नतीजे आये है और कुछ इदारे कायम हुए। 2013 में 30 जून से 2 जून से 2 जुलाई तक उन्होंने राजस्थान का दौरा, मेरी दरख़्वास्त पर किया, जिसमें वह छबड़ा, कोटा, टोंक व जयपुर के सरकारी व गैर सरकारी आला अफसरान व बुद्धिजीवियों से मिले। उनकी पूर्व गवर्नर राजस्थान मार्ग्रेट अलवा, मुख्य सचिव सी.के. मैथ्यू, वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष मरहूम लियाकत अली ख़ान के साथ अन्य लोगों से जयपुर में विचारों का आदान प्रदान हुआ। छबड़ा कस्बे में हिलव्यू ग्रुप के चैयरमेन रिज़्वान एजाज़ी साहब ने शिक्षा की सोच व विकास में रूचि लेने वाले व्यक्तियों, सियासी लोगों व आला अफसरान के साथ एक बड़ा सम्मेलन आयोजित किया। टोंक में रोटरी क्लब के सदस्यों ने डा. साहब का विशेष सम्मान किया और निज़ाम ग्रुप के मोइनुद्दीन जी व प्रमुख समाज सेवी मेजर अनवर शाह साहब ने विशेष बैठक आयोजित की। जयपुर में प्रोगेसिव मुस्लिम सोशल सर्किल सोसायटी द्वारा एक विशेष बैठक आयोजित कर डॉ. साहब का स्वागत किया गया और पीएमएससी के संस्थापक होने के नाते मुझे अल अमीन एजूकेशनल सोसाइटी की आजीवन सदस्यता प्रदान की। साथ ही उन्होंने अल अमीन की सरपरस्ती में एक ट्रस्ट ए.आर. वेलफेयर फाउण्डेशन की स्थापना कराई। उनके इस दौरे से राजस्थान में भी तालीमी मशाल जली और हिलव्यू ग्रुप व ए.आर.वेलफेयर फाउण्डेशन ने शिक्षा, रोजगार व अन्य सेवाओं में एक नाम स्थापित कर डॉ. मुमताज़ अहमद खान के ख़्वाब को बहुत हद तक पूरा किया है।

डॉ. मुमताज़ अहमद ख़ान की मेहनत और कुर्बानी पर बहुत कुछ लिखा गया है और लिखा जा सकता है। डॉ. मुमताज़ अहमद ख़ान सिर्फ मुस्लिम तालीम के ही बानी नहीं थे बल्कि उन्होंने देश में सभी वंचित लोगों और परिवारों के विकास के लिए काम किया। वह कहते थे कि स्कूल की फ़ीस जमा न होने या कपड़े और किताब मुहैया न होने की वजह से एक भी बच्चा स्कूल जाने से न रह जाये। इसलिए करोड़ों बच्चों को वज़ीफा देकर मदद करते रहे। आखिर में डॉ. साहब को खिराजे अक़ीदत के तोर पर डॉ. अल्लास इकबाल का शेर पेश है...

हज़ारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है...
बढ़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

ए. आर.खान, आईएएस रिटा. व प्रमुख समाज सेवी

यौमे पैदाईश पर एआर फांउडेशन ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

डॉ. मुमताज़ अहमद ख़ान की याद में उनकी योमे पैदाइश पर फाउंडेशन डे हर साल मनाया जाता है। डॉ. मुमातज़ साहब ने शिक्षा को नया आकाश नई दिशा प्रदान की। तालीम के बानी मुमताज़ साहब अल-अमीन एज्युकेशन सोसायटी के संस्थापक होने के साथ-साथ समाज को शिक्षा की दिशा में ले जाने वाले प्रतिनिधि भी थे। ए. आर.फाउंडेशन के कार्यालय में डॉ ए.आर.ख़ान ने श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किया जिसमें मुख्य अतिथि रिज़वान एजाज़ी रहे। इस अवसर पर अज़ीज़ा ख़ानम, राना ताज़, वसीम परवेज़, समीउद्दीन, फ़ौज़ीया ख़ानम, नजीब अनवर एडवोकेट, सलीम भाई, माजिद मतीन जी, हाज़ी समीउद्दीन साहब, वक़ील शमीम साहब, जूही रिज़वान जी मौजूद रहे।

सभी ने शब्द सुमन श्रद्धांजलि अर्पित की...

जेसीएस ने शिक्षक दिवस पर वर्चुअल संगीत संध्या आयोजित कर डॉ. आनंद गंगवार को दी भावभीनी श्रद्धांजलि

डॉ. आनंद गंगवार जेसीएस के संस्थापक, फ़िल्म अभिनेता, निर्देशक, कवि, शायर व थियेटर का जाना माना नाम रहे हैं। डॉ. श्री आनंद गंगवार की जीवन यात्रा एक नज़र में....

जयपुर कल्चरल सोसायटी जयपुर के सिरमौर,संचालक, संस्थापक डॉ श्री आनंद के. गंगवार 11 मार्च को नहीं रहे। कार्डिक अटैक से श्री गंगवार जीवन से चले गए लेकिन अपने पीछे छोड़ गए जयपुर कल्चरल सोसायटी जैसी विरासत जिसमें अंसख्य सदस्य हैं। जेसीएस के सभी सदस्य जाने माने फील्ड से हैं। कार्यक्रम की मुख्य सूत्रधार कंचन आनन्द ने बताया कि डॉ आनंद गंगवार ने जेसीएस की स्थापना 1986 में की। 35 वर्षीय पुरानी इस सांस्कृतिक धरोहर ने कई लाइव शो ग़ज़ल,गीत,सुरमई संगीत संध्या जैसे आयोजन निरन्तर किये हैं। जेसीएस एक ऐसी संस्था है जो अभिनय की दुनिया में थियेटर शो,फ़िल्म,संगीत कार्यक्रम आयोजित करती आ रही है। हज़ारों नवोदित कलाकारों को इसमें अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए मंच मिला है और वे आज देश विदेश में धूम मचा रहे हैं और इसमें से कई कलाकार संगीत व अभिनय की दुनिया में स्थापित हो चुके हैं। सनम तेरा इश्क़ फ़िल्म का निर्देशन आनंद गंगवार ने किया जो कि बड़े पर्दे (सिल्वर स्क्रीन) पर आ चुकी है और आगामी सिल्वर स्क्रीन फ़िल्म कियारा है जो कि एक हॉरर फ़िल्म है। इसके अतिरिक्त कई थियेटर शो श्री गंगवार द्वारा निर्देशित किये गए जिसमें कसाईवाड़ा, प्रसिद्ध थियेटर शो है जिसे कई बार मंचित किया गया। इसके अतिरिक्त माटी का घर, सादर आपका, बादल सरकार का एक से बढ़कर एक जैसे कई थियेटर शो का मंचन व निर्देशन व अभिनय आनंद गंगवार ने किया।

फार्मा बिज़नेस से जुड़े गंगवार स्वयं एक आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होने के साथ-साथ शायर,फ़िल्म अभिनेता, फ़िल्म निर्देशक थे। अपनी व्यवहार कुशलता और सूझबूझ से आपने कई बड़ी हस्तियों को जेसीएस से जोड़ा और भारतीय संस्कृति और संगीत को नए आयाम दिए। कॅरिओके की परपंरा को जयपुर में पहली बार जेसीएस द्वारा आयोजित कॅरिओके किंग एन्ड क्वीन पहचान दी गयी थी जो कि 3 वर्ष पूर्व आयोजित की गई थी।

रूठ कर हमसे कहीं जब चले जाओगे तुम....

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। पत्रकार कॉलोनी स्थित जेसीएस के सदस्य मुकेश पारीक के निवास पर श्रद्धांजलि के रूप में वर्चुअल संगीत सन्ध्या का आयोजन किया गया जिसकी व्यूहरचना डॉ गंगवार की पत्नी कंचन आनंद ने की और इसे शक्ति व सहयोग दिया जेसीएस सदस्य अंजली वर्मा,मुकेश पारीक, धर्मेंद्र उपाध्याय, सुधीर शर्मा कुलदीप गुप्ता व शालिनी श्रीवास्तव, प्रेक्षा पारीक, अनवर व मुकेश पारीक के परिवार के सभी सदस्यों ने। तू इस तरह से मेरी ज़िंदगी, रूठकर हमसे कहीं,हम दोनों मिलकर कागज़ पे दिल के,पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा, मुझे छू रही हैं, मेरा प्यार वो है कि मरकर भी तुमको, हमको तुमसे प्यारा कौन, लंबी जुदाई, कोई ये कैसे बताए कि वो तन्हा क्यों है जैसे कई भावुक गीतों व नज़्मों को अपने स्वर से सजाया मुकेश पारीक, अंजली वर्मा,धर्मेंद्र उपाध्याय, सुधीर शर्मा व शालिनी श्रीवास्तव ने। कुलदीप गुप्ता व शालिनी श्रीवास्तव ने भावपूर्ण कुशल मंच संचालन किया। श्रीमती कंचन आनंद ने विश्वास दिलाया कि डॉ गंगवार के सिद्धांत और उसूलों पर जेसीएस हमेशा सांस्कृतिक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करता रहेगा और सबको धन्यवाद ज्ञापित करते हुए डॉ. गंगवार को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**